Sanchayan Ch-5: Girgit - Anton Chekhov

गिरगिट - एंटन चेखव

1. Author Introduction: Anton Chekhov

- जन्म: 29 जनवरी 1860, तगानरोग (रूस)
- पूरा नाम: एंटन पावलोविच चेखव (Anton Pavlovich Chekhov)
- भाषा: रूसी (हिंदी अनुवाद)
- पेशा: चिकित्सक (डॉक्टर) और लेखक - दोनों साथ-साथ
- साहित्यिक क्षेत्र: लघु कहानी, नाटक
- विशेषता: छोटी कहानियों के मास्टर, यथार्थवादी लेखन
- प्रमुख रचनाएं:

- कहानियां: गिरगिट, वार्ड नंबर 6, दुख, वान्या अंकल
- नाटक: द सीगल, अंकल वान्या, थ्री सिस्टर्स, द चेरी ऑर्चर्ड

- शैली: यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, व्यंग्य
- विषय: मानव स्वभाव, समाज की विसंगतियां, नौकरशाही, अवसरवाद
- प्रभाव: विश्व साहित्य पर गहरा प्रभाव, आधुनिक लघु कहानी के जनक माने जाते हैं
- मृत्यु: 15 जुलाई 1904, जर्मनी (केवल 44 वर्ष की आयु में, टीबी से)
- विरासत: उनकी कहानियां और नाटक आज भी प्रासंगिक, विश्वभर में पढ़े और मंचित किए जाते हैं

2. Story Summary and Plot

कहानी का विस्तृत सार:

प्रारंभ - बाजार का दृश्य:

- रूस का एक छोटा कस्बा, बाजार का समय
- ओचुमेलॉव - पुलिस इंस्पेक्टर, रोबदार, खाकी वर्दी में
- येल्दीरीन - उनका सिपाही, कोट भर में जब्त सामान लेकर चल रहा
- बाजार में सन्नाटा, लोग डर से किनारे हो जाते हैं
- अचानक किसी का चिल्लाना - "पकड़ो! पकड़ो कुत्ते को!"

घटना - कुत्ते का काटना:

- खुकिन - सुनार, चिल्ला रहा है, हाथ में खून

- आरोप: एक कुत्ते ने काट लिया
- ओचुमेलॉव पहुंचता है - "क्या हुआ?"
- खुकनि: "साहब, मैं तो शांति से लकड़ी के लिए जा रहा था, यह कमीना कुत्ता अचानक काट लिया"
- कुत्ता: छोटा, सफेद, नुकीली थूथन वाला, पीठ पर काला धब्बा
- भीड़ इकट्ठी हो जाती है

पहली प्रतिक्रिया - कुत्ते के खिलाफ:
- ओचुमेलॉव (गुस्से में): "यह किसका कुत्ता है? मैं इसके मालिक को नहीं छोड़ूंगा!"
- "आवारा कुत्तों को मार डालो! यह कानून के खिलाफ है!"
- खुकनि का साथ: "बिल्कुल सही, ऐसे कुत्ते को मार देना चाहिए"
- ओचुमेलॉव: "येल्दीरीन, पता लगाओ किसका कुत्ता है। रिपोर्ट लिखो। कुत्ते को मार डालो।"
- सख्ती दिखाना: "मैं इस शहर में किसी को नहीं छोड़ता"

पहला मोड़ - जनरल साहब का नाम:
- भीड़ से कोई: "शायद यह जनरल झिगालॉव साहब का कुत्ता है"
- ओचुमेलॉव (झटके से): "जनरल झिगालॉव का? हम्म..."
- तुरंत रुख बदलना: "येल्दीरीन, मेरा कोट उतारो, बहुत गर्मी है"
- (मन में) - अगर जनरल साहब का कुत्ता है तो मुसीबत हो जाएगी
- खुकनि की ओर: "तुमने शायद खुद ही कुत्ते को परेशान किया होगा"
- लहजा बदलना: "तुम झूठ बोल रहे हो। कुत्ता भला बिना वजह काटेगा?"

दूसरा मोड़ - नहीं है जनरल साहब का:
- कोई और: "नहीं साहब, जनरल साहब के पास ऐसा कुत्ता नहीं है"
- ओचुमेलॉव (फिर रुख बदलते हुए): "अच्छा! तो यह आवारा कुत्ता है!"
- येल्दीरीन को: "मेरा कोट पहनाओ, ठंड लग रही है"
- फिर सख्ती: "इस कुत्ते को मार डालो! मालिक को जुर्माना!"
- खुकनि का फिर से साथ: "मुझे डॉक्टर के पास जाना होगा"

तीसरा मोड़ - भाई का कुत्ता हो सकता है:
- भीड़ से कोई: "शायद यह जनरल साहब के भाई का कुत्ता हो। उनके भाई कल आए हैं"
- ओचुमेलॉव (फिर बदलाव): "जनरल साहब के भाई का? ओह!"
- कुत्ते की तरफ: "अरे, कितना प्यारा कुत्ता है! कितना छोटा!"
- खुकनि की ओर (गुस्से से): "तुमने जरूर इसे छेड़ा होगा। कुत्ता भला यूं ही काटेगा?"
- धमकी: "मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। तुम जैसों को सजा मिलनी चाहिए"

अंतिम पुष्टि - जनरल के भाई का ही है:

- प्रोखोर - जनरल का रसोइया, आता है
- ओचुमेलॉव: "प्रोखोर, यह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है क्या?"
- प्रोखोर: "हां, हुजूर। उन्होंने कल मंगवाया है।"
- ओचुमेलॉव (खुश होकर): "ओह अच्छा! ले जाओ इसे। बहुत अच्छा कुत्ता है।"
- कुत्ते की तारीफ: "तेज है, चालाक है! इसने इस बदमाश की उंगली पकड़ ली!"
- प्रोखोर कुत्ते को लेकर चला जाता है

अंत - खुकनि की दुर्दशा:
- ओचुमेलॉव खुकनि को धमकाता है: "मैं तुम्हें अभी भी नहीं छोड़ूंगा!"
- खुकनि निराश, अपमानित, उंगली दर्द से सूजी हुई
- भीड़ खुकनि पर हंसती है
- ओचुमेलॉव रोब से चला जाता है

3. Detailed Character Analysis

ओचुमेलॉव (मुख्य पात्र - पुलिस इंस्पेक्टर):
- पद: पुलिस इंस्पेक्टर, छोटे कस्बे का अधिकारी
- उम्र: मध्यम आयु, अनुभवी (कहानी में उम्र नहीं बताई गई)
- वेशभूषा: खाकी वर्दी, ओवरकोट (जो बार-बार पहनता-उतारता है)
- स्वभाव:

- अवसरवादी: जिसकी लाठी उसकी भैंस
- चापलूस: ताकतवर के आगे झुकना
- कायर: कमजोर को दबाना
- चरित्रहीन: कोई सिद्धांत नहीं, स्वार्थ ही सब कुछ
- व्यवहार:

- ताकतवर का नाम सुनते ही रुख बदलना (5 बार रुख बदला!)
- कमजोर के साथ अन्याय
- अपनी नौकरी बचाने के लिए कुछ भी करना
- प्रतीक: भ्रष्ट नौकरशाही, अवसरवादी समाज का प्रतीक
- गिरगिट: रंग बदलने में माहिर - हर स्थिति के अनुसार अपना रंग बदल लेता है

खुकनि (पीड़ित - सुनार):
- पेशा: सुनार (स्वर्णकार)
- स्थिति: आम आदमी, कमजोर, असहाय
- घटना: कुत्ते ने काट लिया, उंगली से खून बह रहा
- अपेक्षा: न्याय मिलेगा, पुलिस इंस्पेक्टर मदद करेगा
- वास्तविकता: अपमान, धमकी, कोई मदद नहीं

- अंत: निराश, दुखी, अपमानित
- प्रतीक: आम आदमी, जिसे न्याय नहीं मिलता

येल्दीरीन (सिपाही):
- पद: ओचुमेलॉव का सिपाही, कनिष्ठ अधिकारी
- काम: ओचुमेलॉव के आदेश मानना, जब्त सामान ढोना
- स्वभाव: आज्ञाकारी, चुपचाप काम करने वाला
- भूमिका: साइड कैरेक्टर, लेकिन महत्वपूर्ण - ओचुमेलॉव का कोट उतारना-पहनाना (प्रतीकात्मक)
- प्रतीक: सिस्टम का हिस्सा, सवाल नहीं करता, बस आदेश मानता है

कुत्ता:
- विवरण: छोटा, सफेद, नुकीली थूथन, पीठ पर काला धब्बा
- भूमिका: कहानी का केंद्र, लेकिन खुद कुछ नहीं करता
- महत्व: कुत्ते के मालिक की पहचान पर सब कुछ निर्भर
- प्रतीक: ताकत का प्रतीक - किसका है वो, उसी के अनुसार सम्मान या अपमान

जनरल झिगालॉव (अनुपस्थित पात्र):
- भूमिका: सीधे कहानी में नहीं है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण
- ताकत: उनके नाम से सब डरते हैं
- प्रभाव: उनके कुत्ते की वजह से खुकिन को न्याय नहीं मिला
- प्रतीक: शक्ति, प्रभाव, जिसके आगे सब झुकते हैं

भीड़ (समाज):
- भूमिका: मूकदर्शक, तमाशबीन
- व्यवहार: पहले खुकिन के साथ, फिर उस पर हंसते हैं
- प्रतीक: उदासीन समाज, जो अन्याय देखकर भी कुछ नहीं करता

4. Major Themes and Social Satire

मुख्य विषय:

अवसरवाद (Opportunism):
- ओचुमेलॉव का चरित्र - सबसे बड़ा उदाहरण
- परिस्थिति के अनुसार रुख बदलना
- सिद्धांत नहीं, स्वार्थ ही सब कुछ
- जो फायदेमंद हो वही करना
- आज भी ऐसे लोग हर जगह मिलते हैं

सत्ता की चापलूसी:

- ताकतवर का नाम सुनते ही घुटने टेक देना
- जनरल साहब का नाम = खुकिन बदमाश हो गया
- कुत्ता = जनरल का = प्यारा, तेज, चालाक
- कुत्ता = आवारा = मार डालो
- आज भी नेताओं, अधिकारियों के आगे यही होता है

भ्रष्ट नौकरशाही:

- पुलिस इंस्पेक्टर को न्याय देना चाहिए
- लेकिन ओचुमेलॉव अपना फायदा देखता है
- कमजोर की कोई सुनवाई नहीं
- सिस्टम ताकतवर के साथ है
- रूस की समस्या थी, आज भारत में भी है

गिरगिट प्रवृत्ति:

- शीर्षक "गिरगिट" - अत्यंत सार्थक
- गिरगिट परिस्थिति के अनुसार रंग बदलता है
- ओचुमेलॉव भी वैसे ही - 5 बार रुख बदला!
- कोट पहनना-उतारना = रुख बदलने का प्रतीक
- आज भी राजनीति में गिरगिट बहुत हैं

कमजोर का शोषण:

- खुकिन का कोई नहीं
- कुत्ते ने काटा लेकिन वही दोषी
- न्याय की उम्मीद थी, अपमान मिला
- समाज भी साथ नहीं देता
- आज भी गरीब, कमजोर के साथ यही होता है

नाममात्र का कानून:

- कानून सबके लिए बराबर होना चाहिए
- लेकिन असलियत में - ताकतवर के लिए अलग, कमजोर के लिए अलग
- खुकिन को कानून की मदद नहीं मिली
- कानून के रखवाले ही भ्रष्ट
- यह सार्वभौमिक समस्या है

सामाजिक उदासीनता:

- भीड़ तमाशा देखती है
- कोई खुकनि का साथ नहीं देता
- पहले सहानुभूति, फिर उपहास
- समाज की कायरता
- आज भी लोग वीडियो बनाते हैं, मदद नहीं करते

5. Symbolism and Literary Devices

प्रतीकवाद (Symbolism):

गिरगिट (शीर्षक):
- गिरगिट = रंग बदलने वाला जीव
- ओचुमेलॉव = मानव गिरगिट
- परिस्थिति के अनुसार रंग (रुख) बदलना
- अवसरवाद का प्रतीक
- व्यंग्यात्मक शीर्षक

ओवरकोट (कोट):
- कोट पहनना-उतारना = 5 बार
- हर बार रुख बदलने पर कोट की बात
- प्रतीक: रुख बदलने का बाहरी चिह्न
- "गर्मी है" = झूठ बोलने के लिए बहाना
- "ठंड है" = फिर झूठ
- शारीरिक बदलाव = मानसिक बदलाव का प्रतीक

कुत्ता:
- कुत्ता खुद कुछ नहीं करता
- लेकिन कहानी का केंद्र
- किसका है = सबसे महत्वपूर्ण सवाल
- प्रतीक: पद, पावर, प्रभाव

उंगली का खून:
- खुकनि की घायल उंगली
- शारीरिक चोट + मानसिक चोट
- प्रतीक: आम आदमी की पीड़ा
- कोई परवाह नहीं - न्याय का मखौल

व्यंग्य (Satire):

- कहानी पूरी व्यंग्यात्मक है
- नौकरशाही पर तीखा प्रहार
- हास्यास्पद स्थिति - ओचुमेलॉव का रुख बदलना
- पाठक को हंसाना + सोचने पर मजबूर करना
- चेखव की विशेषता - हल्के व्यंग्य से गहरी बात

विडंबना (Irony):

- पुलिस = न्याय देने वाला, लेकिन यहां अन्याय करता है
- पीड़ित = दोषी बन जाता है
- दोषी (कुत्ता) = सम्मान पाता है
- कानून का रखवाला = कानून तोड़ता है

नाटकीयता:

- कहानी एक नाटक की तरह
- दृश्य: बाजार, खुली जगह
- संवाद प्रधान: ज्यादातर बातचीत
- एक्शन: ओचुमेलॉव का कोट पहनना-उतारना
- क्लाइमैक्स: प्रोखोर का आना और पुष्टि

6. Contemporary Relevance

आज की प्रासंगिकता:

राजनीति में:

- नेता जो पार्टी बदलते रहते हैं - गिरगिट
- आज यह पार्टी, कल दूसरी - सिद्धांत नहीं
- जहां सत्ता, वहीं जाना
- चुनाव के समय झूठे वादे
- सत्ता में आने पर भूल जाना

नौकरशाही में:

- अफसर जो ताकतवर के आगे झुकते हैं
- कमजोर को परेशान करना
- फाइलें घूमती रहती हैं
- रिश्वत, भाई-भतीजावाद
- गरीब को न्याय नहीं मिलता

समाज में:

- लोग जो अमीर-ताकतवर के साथ जुड़ना चाहते हैं
- गरीब-कमजोर से दूर भागना
- फायदे के लिए किसी के भी साथ
- सोशल मीडिया पर भी - ट्रेंड के अनुसार राय बदलना

मीडिया में:

- कुछ चैनल/अखबार जो सत्ता का गुणगान करते हैं
- विपक्ष का विरोध करते हैं
- सत्ता बदली तो राय बदल जाती है
- सच्चाई नहीं, फायदा देखते हैं

व्यक्तिगत जीवन में:

- लोग जो सफल व्यक्ति के साथ दोस्ती करते हैं
- मुसीबत में साथ छोड़ देना
- अच्छे दिनों में साथ, बुरे में गायब
- चापलूसी करना

समाधान की जरूरत:

- मजबूत कानून व्यवस्था
- भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कार्यवाही
- नैतिक शिक्षा, मूल्यों की शिक्षा
- समाज में जागरूकता
- व्यक्तिगत ईमानदारी और साहस

7. Literary Excellence

चेखव की कला:

संक्षिप्तता:

- छोटी कहानी लेकिन प्रभावशाली
- कोई शब्द फालतू नहीं
- हर वाक्य जरूरी
- लघु कहानी के मास्टर

यथार्थवादी चित्रण:

- असली जिंदगी जैसा
- पात्र विश्वसनीय

- घटना सच लगती है
- कोई अतिरंजना नहीं

मनोवैज्ञानिक गहराई:
- ओचुमेलॉव के मन का विश्लेषण
- क्यों रुख बदलता है - समझ आता है
- मानव स्वभाव की परतें खोलना
- पात्रों के मन में झांकना

व्यंग्य की तीक्ष्णता:
- हल्के अंदाज में गहरी बात
- हास्य के साथ व्यंग्य
- सीधी आलोचना नहीं, लेकिन संदेश स्पष्ट
- पाठक खुद समझ जाता है

संवाद लेखन:
- स्वाभाविक, जीवंत संवाद
- हर पात्र का अलग तरीका
- संवाद से ही चरित्र खुलते हैं
- नाटकीयता

वर्णन:
- कम लेकिन प्रभावशाली
- दृश्य आंखों के सामने आ जाता है
- पात्रों का विवरण - ठीक उतना जितना जरूरी
- वातावरण का चित्रण

सार्वभौमिक अपील:
- रूस की कहानी लेकिन हर देश में लागू
- हर युग में प्रासंगिक
- मानव स्वभाव का सच्चा चित्रण
- इसलिए अमर कहानी

8. Important Exam Questions

प्रश्न 1: "गिरगिट" कहानी का शीर्षक कितना सार्थक है? विस्तार से समझाइए।
उत्तर: शीर्षक पूर्णतः सार्थक और व्यंग्यात्मक है। कारण: (1) गिरगिट रंग बदलता है, ओचुमेलॉव रुख बदलता है - 5 बार!, (2) परिस्थिति के अनुसार बदलाव - गिरगिट की प्रकृति, (3) अवसरवाद का प्रतीक - जैसा फायदा वैसा रंग, (4) व्यंग्य - मनुष्य को

[redacted], (5) [redacted] - [redacted]

प्रश्न 2: ओचुमेलॉव का चरित्र-चित्रण कीजिए। वह कितनी बार और क्यों अपना रुख बदलता है?
उत्तर: ओचुमेलॉव भ्रष्ट, अवसरवादी पुलिस इंस्पेक्टर है। चरित्र: (1) चापलूस - ताकतवर के आगे झुकता है, (2) कायर - कमजोर को दबाता है, (3) चरित्रहीन - कोई सिद्धांत नहीं, (4) स्वार्थी - अपना फायदा ही सब कुछ। रुख बदलना: पांच बार! (1) शुरू - कुत्ता आवारा, मार डालो, (2) जनरल का हो सकता है - खुकिन गलत, (3) नहीं है जनरल का - फिर कुत्ता आवारा, (4) भाई का हो सकता है - कुत्ता प्यारा, (5) पुष्टि - भाई का ही है - खुकिन बदमाश। कारण: अपनी नौकरी बचाना, जनरल साहब को नाराज नहीं करना। वह भ्रष्ट नौकरशाही का प्रतीक है।

प्रश्न 3: कहानी में खुकिन की क्या स्थिति है? उसे न्याय क्यों नहीं मिला?
उत्तर: खुकिन पीड़ित है, आम आदमी का प्रतिनिधि। स्थिति: (1) कुत्ते ने काटा, उंगली से खून बह रहा, (2) न्याय की उम्मीद से पुलिस इंस्पेक्टर के पास गया, (3) लेकिन मिला अपमान, धमकी, उपहास, (4) अंत में निराश, दुखी, असहाय। न्याय क्यों नहीं मिला: (1) कुत्ता जनरल साहब के भाई का था, (2) ताकतवर के खिलाफ कौन बोलेगा?, (3) पुलिस इंस्पेक्टर खुद भ्रष्ट और डरपोक, (4) समाज ने साथ नहीं दिया, (5) कानून केवल कमजोरों के लिए। यह दिखाता है कि आम आदमी को न्याय मिलना कितना मुश्किल है।

प्रश्न 4: कहानी में कोट पहनने-उतारने का क्या महत्व है?
उत्तर: कोट पहनना-उतारना अत्यंत प्रतीकात्मक है: (1) हर बार रुख बदलने पर कोट की बात - 5 बार, (2) शारीरिक बदलाव = मानसिक बदलाव का संकेत, (3) बहाने बनाना - "गर्मी है" या "ठंड है" = झूठ, (4) बेचैनी दिखाना - अंदर का तनाव, (5) नाटकीय प्रभाव - पाठक का ध्यान खींचना। कोट उतारना = एक रुख, कोट पहनना = दूसरा रुख। यह चेखव की प्रतिभा है कि छोटी चीज को इतना प्रभावशाली बना दिया।

प्रश्न 5: "गिरगिट" कहानी का व्यंग्य किन-किन पर है? समझाइए।
उत्तर: व्यंग्य बहुस्तरीय है: (1) भ्रष्ट नौकरशाही - ओचुमेलॉव जैसे अधिकारी, (2) सत्ता की चापलूसी - ताकतवर का नाम सुनते ही घुटने टेकना, (3) कमजोर पर अन्याय - खुकिन को न्याय नहीं मिला, (4) नाममात्र का कानून - जो ताकतवर के लिए अलग, कमजोर के लिए अलग, (5) उदासीन समाज - भीड़ जो तमाशा देखती है, मदद नहीं करती, (6) अवसरवाद - परिस्थिति के अनुसार रंग बदलना। चेखव ने हंसते-हंसते गहरी बात कह दी। यह व्यंग्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

प्रश्न 6: कहानी आज के समय में कैसे प्रासंगिक है? उदाहरण सहित बताइए।
उत्तर: कहानी आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है: (1) राजनीति - नेता जो पार्टी बदलते हैं (उदाहरण: कई नेता जो एक पार्टी छोड़कर दूसरी में जाते हैं), (2) नौकरशाही - अफसर जो ताकतवर के आगे झुकते हैं, गरीब को परेशान करते हैं, (3) समाज - लोग जो अमीर-ताकतवर के साथ दोस्ती करते हैं, गरीब से दूर भागते हैं, (4) मीडिया - कुछ चैनल जो सत्ता का गुणगान करते हैं, सत्ता बदली तो राय बदल जाती है, (5) व्यक्तिगत जीवन - चापलूस लोग जो फायदे के लिए कुछ भी करते हैं। चेखव ने 1884 में लिखी कहानी आज 2026 में भी उतनी ही सच है। मानव स्वभाव नहीं बदलता।